AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

दाखिला प्रक्रिया पूरी, पीएचडी की सीटें भरीं, पीजी की खाली

लविवि ने कहा, कॉलेज अपनी बची सीटों पर ले सकते हैं दाखिले

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में साल भर से चल रही पीएचडी और नौ महीने से चल रही पीजी प्रवेश प्रक्रिया पूरी होने की घोषणा कर दी गई है। विवि में पीएचडी दाखिले की अंतिम तिथि 31 दिसंबर तथा परास्नातक की एक जनवरी थी। लविवि प्रवेश सेल के अनुसार पीएचडी में सभी सीटों पर दाखिले हो गए हैं, जबकि परास्नातक में तीन लिस्ट के बाद अब आगे कोई सूची जारी नहीं होगी। कॉलेज अपनी बची सीटों पर दाखिले ले सकते हैं। वहीं लविवि की खाली सीटों का ब्योरा सोमवार को कुलपति के पास रखा जाएगा।

लविवि में पीएचडी प्रवेश प्रक्रिया जनवरी 2020 में शुरू हुई थी। विभिन्न वजहों से यह काफी लंबी खिंच गई। वहीं परास्नातक स्तर पर इस साल केंद्रीकृत प्रणाली से दाखिले हुए हैं। प्रवेश परीक्षा के रिजल्ट में गड़बड़ी होने से पूरा

■ लविवि की सीटों का ब्योरा आज कुलपति के सामने रखा जाएगा

रिजल्ट निरस्त किया गया था। इसके बाद नए सिरे से रिजल्ट जारी करके दाखिले किए गए। इस वजह से प्रवेश प्रक्रिया पूरी होने में काफी समय लग गया। लविवि ने परास्नातक स्तर पर दाखिले की तीन सूची जारी की है। इसके बाद भी कुछ सीटें खाली बची हैं। लविवि ने दाखिले के लिए अब नई सूची निकालने से मना कर दिया है। हालांकि कॉलेजों को यह छूट दी गई है कि वे अपने स्तर से दाखिले कर लें। प्रवेश प्रक्रिया पूरी होने के बाद लविवि ने पढ़ाई की तैयारी भी शुरू कर दी है। विद्यार्थियों को विभाग में रिपोर्ट करने के बाद क्लास करने को कहा जाएगा।

स्नातक प्रथम वर्ष की परीक्षा जून तक कराने का प्रस्ताव

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में स्नातक प्रथम वर्ष की परीक्षा जून तक कराने का प्रस्ताव है। इसके अलावा बाकी परीक्षाएं जनवरी के अंतिम सप्ताह में प्रस्तावित हैं। कोरोना संक्रमण की वजह से इस साल से पढ़ाई और परीक्षा दोनों की गाड़ी पटरी से उतरी है। जुलाई में शुरू होने वाले सत्र की शुरुआत अगस्त में हो तो गई, लेकिन अभी भी पढ़ाई की गाड़ी पूरी तरह से पटरी पर नहीं आई है। उच्च शिक्षा विभाग ने विश्वविद्यालयों को अप्रैल-मई में परीक्षा कराने का निर्देश दे रखा है, लेकिन सेमेस्टर प्रणाली वाले लविवि में इसका पालन संभव नहीं लग रहा है। प्रदेश के बाकी विश्वविद्यालयों में वार्षिक प्रणाली लागू है, वहीं लविवि में सेमेस्टर प्रणाली चल रही है। इस वजह से यहां पर अप्रैल-मई में पूरी परीक्षा कराना मुश्किल लग रहा है। दाखिले के बाद यहां पर 90 दिन की अनिवार्य क्लास के बाद ही सेमेस्टर परीक्षा हो सकती है। न्यूनतम क्लास की अनिवार्यता के बाद इनकी परीक्षा जून से पहले शुरू करना कहीं से भी संभव नहीं होगा। इसलिए लविवि में न्यूनतम क्लास की अनिवार्यता का पालन करने के बाद जून तक ही इनकी परीक्षा हो पाएगी।

HINDUSTAN PAGE 6

जीवन निर्माण की विद्या है योग

लखनऊ। संपूर्ण विश्व में अष्टांग योग ही एक ऐसा माध्यम है जिससे स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन प्राप्त किया जा सकता है। योग शिक्षा के माध्यम से चरित्र, व्यक्तित्व, चिंतन, को पूर्णतया विकसित कर सकते हैं। जिंदगी जीने की कला सीख सकते हैं। इसलिए योग को जीवन निर्माण की विद्या कहा जाता है।

ये बातें लकुलीश योग विवि अहमदाबाद, गुजरात के कुलपति प्रो. चंद्र सिंह झाला ने रविवार को योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा संकाय लविवि की ओर से 'अष्टांग योग' शीर्षक पर आयोजित वर्चुअल व्याख्यान में कहीं। इस दौरान फैकल्टी के समन्वयक डॉ. अमरजीत यादव ने कहा कि यह मनुष्य जीवन विलक्षण है। इसकी विलक्षणता के उद्घाटन के लिए योग एक सशक्त माध्यम है। जीवन में संपूर्णता के लिए शरीर, मन एवं आत्मा में सामंजस्य होना अनिवार्य है। योग के अभ्यास से ही मनुष्य जीवन में स्वास्थ्य समता, समझ, संस्कार उत्पन्न हो पाएंग, जो मानव निर्माण के लिए उपयोगी आधार बिंदु हैं। व्याख्यान में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के शिक्षक, चिकित्सक एवं छात्र-छात्राएं शामिल थे।

अभिनव गुप्त संस्थान में नए सत्र से दाखिले

लखनऊ। एलयू प्रशासन के अभिनव गुप्त संस्थान में आगामी सत्र में दाखिले होंगे। अभी तक इस संस्थान में अभिनव गुप्त के सौन्दर्य कला एवं शैव दर्शन पर केवल शोध होते हैं। इसमें देश विदेश से शोधार्थी आते थे। लेकिन आगामी सत्र से इसमें इन्हीं विषयों में परास्नातक की भी योजना है। इसके लिए सिलेबस लगभग बनकर तैयार हो चुका है।

विश्वविद्यालय इसे स्कूल के रूप में स्थापित करने जा रहा है। एलयू प्रशासन के मुताबिक करीब 2 माह के भीतर इस इमारत के निर्माण का कार्य पूरा हो जाएगा। पदमश्री प्रो. बीके शुक्ला ने बताया कि ये संस्थान 5 अगस्त 1968 में स्थापित हुआ। इसकी स्थापना उस समय के संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष और प्रोफेसर डॉ.कांतिचंद्र पांडेय ने की थी। जिसका शिलान्यास 21 दिसंबर 1968 में मौजूदा कुलपति डॉ. मुकुन्द बिहारी लाल ने किया था।

बता दें कि इस भवन का निर्माण अपने अंतिम चरण में है। इसके लिए साल 2018 में 2.96 करोड़ की ग्रांट शासन से एलयू के निर्माण निगम को प्राप्त हुई थी। अब इस भवन में करीब 12 कमरे, 2 बड़े हॉल व एक लाइब्रेरी बन कर तैयार हैं। तीसरी मंजिल पर एक सेमिनार हॉल प्रस्तावित है।

PIONEER PAGE 4

सेमेस्टर परीक्षा बाद स्टूडेंट्स दे सकेंगे मूल्यांकन को चुनौती

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

- चैलेंज इवैल्यूएशन में 20 फीसदी से अधिक मार्क्स में परिवर्तन आने पर शिक्षकों पर कार्रवाई तय

जनवरी के अंत से शुरू हो रही सेमेस्टर परीक्षाओं के परिणाम को लेकर स्टूडेंट्स मूल्यांकन को चुनौती दे सकेंगे। परीक्षा परिणाम से नाखुश स्टूडेंट्स की मांग पर अगर दोबारा मूल्यांकन होने पर 20 फीसदी से अधिक मार्क्स में परिवर्तन आने पर शिक्षकों पर कार्यवाही की जाएगी। लखनऊ विश्वविद्यालय ने चैलेंज इवैल्यूएशन को प्रभावी बना दिया है। चैलेंज इवैल्यूएशन में एक स्टूडेंट्स के 20 फीसदी मार्क्स बढ़ने पर इवैल्यूएशन करने वाले टीचर को नोटिस, 3 स्टूडेंट्स के मार्क्स में परिवर्तन आने पर इवैल्यूएशन करने वाले टीचर का पारिश्रमिक काटने और 5 स्टूडेंट्स के मार्क्स में परिवर्तन आने पर इवैल्यूएशन करने वाले टीचर को परीक्षा से डिबार कर दिया जाएगा।

स्टूडेंट्स ऐसे कर सकते हैं चैलेंज इवैल्यूएशन के लिए आवेदन: चैलेंज इवैल्यूएशन के लिए आरटीआई के शुल्क 300 रुपये रखा गया है। इसमें 30 दिन के अंदर स्टूडेंट्स को ऑनलाइन स्कैन कॉपी उपलब्ध कराई जाएगी। यदि कॉपी देखने के बाद स्टूडेंट्स इवैल्यूएशन से संतुष्ट नही है तो वह इवैल्यूएशन का शुल्क 2500 जमा कर चैलेंज कर सकता है। इवैल्यूएशन चैलेंज होने पर सम्बंधित विभाग प्रमुख चार सदस्यों की कमेटी का नाम कुलपति को भेजेंगे। जिनमे दो के नाम पर कुलपति का एप्रूवल होगा। एप्रूवल के बाद पूर्व में प्राप्त अंको को छिपा कर मूल्यांकन कराया जाएगा। मूल्यांकन के बाद दोनों नम्बरों का आंकलन किया जाएगा। यदि स्टूडेंट्स के नम्बर बढ़ते हैं तो जमा 2500 रुपये शुल्क में से 1000 रुपये वापस कर दिए जाएंगे।

THE PIONEER PAGE 3

LU to procure EEG, other machines for mental health mapping

PNS ■ LUCKNOW

The Psychology department Lucknow University is planning to procure EEG (Electroencephalogram) and other advanced machines for mapping mental health at the Happy Thinking Lab. Head of the department Prof Madhurima Pradhan said they are currently exploring which EEG should be procured. She said they have already acquired Karada Scan to measure body age, body mass index and intake of oxygen, Machine Bio-well GDV to assess energy field status, Aura Scan to measure human energy field, health status, chakra status and stress level. She said they already had the Biofeedback device to measure stress level on five channels.

The HoD said that neuropsychology is an upcoming field in which usage is made of machines such as FMRI (Functional Magnetic Resonance Imaging) and FNIR (Functional Near Infrared). "Neuropsychology is based on the fact that if a person is relaxed, there is a change in the functioning of his or her brain. It is a well-known fact that psychology of a person is well connected with physiology and although there have been many brain researches, there is much that needs to be researched upon," she said

Pradhan said the endeavour is also to find out the scientific base of spiritual practices. On whether a medical doctor is also required for these machines, she said psychologists will be able to use them after a formal training.

"Psychology is now associated with all fields because wherever human behaviour exists, so does psychology. Psychiatry comes in where psychology fails, and we should, through counselling and self-awareness, prepare the students in such a manner that they do not reach that stage where they require medicines for their problems," she added.

Pradhan said the machines will be used primarily for the students and faculty members. She added that there has been a paradigm shift in psychology from misery studies to happiness studies.

"Recent western researches have revealed that happy people see the bright side of affairs, pray and directly struggle with problems. They are involved in goal activities which they value, and happiness can be increased by believing in a larger meaning or force in the universe. Many western concepts lack experiential validity in Indian culture, therefore, it is essential to have an indigenous approach to achieve happiness. It will help people actualise their potentialities of being and becoming happy within the range of possibilities available in our culture — eternal bliss or real happiness," she said.

Pradhan said that young adulthood is the stage of life with immense possibilities of growth and lays the foundation of later adult role taking. "Students have to understand the value of thoughts in creating their feelings, attitudes, actions, habits, personality and finally their destiny. The vision of the lab is to empower the thoughts of youth to understand indigenous notion of happiness to build a world of peace, love and universal harmony by connecting science with spirituality and the objectives are to provide a platform for students to reflect upon their thoughts about happiness, to provide a place for learning meditation and spiritual concepts," she said.

Workshop with research fellows organised at LU

PNS ■ LUCKNOW

The department of Medieval and Modern History, Lucknow University, organised a workshop with the research fellows on the theme 'Female Infanticide'. The programme started with a poem recital by Dr Amitabh Rai, an alumnus of the department. The aim of the workshop was to create awareness among the masses about female infanticide in the society.

The speakers included seven research fellows of the department, including Bambam Yadav, Pradeep Kumar, Manish Kumar Mishra, Neha Katiyar, Devendra Verma, Suraj Singh and Vikas Kumar. All of them highlighted the problems related to women in society, mindset of people in the need to curb more such evil practices like dowry, rape etc.

Bambam Yadav highlighted the role of the Uttar Pradesh government in launching the 'Mission Shakti' programme and various laws in this regard. Suraj Singh presented his ideas through Indian films made on themes related to women. Vikas Kumar provided the statistics of 100 years with regard to female infanticide in India.

MA student Riyaz Alam recited a poem in the concluding session of the workshop. The programme was coordinated by head of the department Dr Shama Mahmood and concluded by Dr SA Rizvi.

i-NEXT PAGE 4

लखनऊ यूनिवर्सिटी ने चुनौती मूल्यांकन की नई व्यवस्था लागू की

परीक्षक होशियार, एक्शन का फॉर्मूला तैयार

iUPDATE

अंकों में बदलाव होने पर परीक्षक के खिलाफ लिया जाएगा एक्शन

lucknow@inext.co.in

LUCKNOW (3 Jan): लखनऊ यूनिवर्सिटी ने चुनौती मूल्यांकन की नई व्यवस्था को लागू कर दिया है. दो चरण में होने वाली इस प्रक्रिया में पहले चरण में स्कैन कॉपी दिखाई जाएगी और दूसरे चरण में परीक्षक दोबारा कॉपी का मूल्यांकन करेंगे. इस संबंध में परीक्षा विभाग की ओर से सभी डिग्री कॉलेजों के प्रिंसिपल को निर्देश जारी कर दिए गए हैं.

CONCEPT PIC

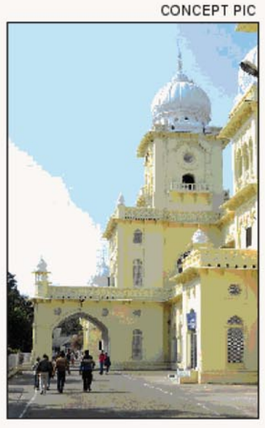

राज भवन से आया था आदेश

राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव महेश कुमार गुप्ता ने 26 नवंबर को सभी यूनिवर्सिटी के वीसी को लेटर लिखकर चुनौती मूल्यांकन की नई व्यवस्था लागू करने को कहा था. जिस पर एलयू ने इस व्यवस्था को लागू कर दिया है. नई व्यवस्था में स्टूडेंट्स रिजल्ट जारी होने के 30 दिन के अंदर चुनौती मूल्यांकन के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं. स्कैन कॉपी देखने के लिए उन्हें 300 रुपए जमा करने होंगे.

परीक्षक को मिलेगी प्रतिकूल प्रविष्टि

अंकों में 20 फीसद से अधिक का बदलाव आने पर मूल परीक्षक को नोटिस भेजी जाएगी और अगर किसी परीक्षक के ऐसे तीन मामले सामने आते हैं तो उसका मूल्यांकन पारिश्रमिक रोक दिया जाएगा. वहीं पांच से अधिक मामले सामने आने पर परीक्षक को कम से कम दो साल के लिए डिबार कर दिया जाएगा. वहीं 10 से अधिक मामले सामने आने पर परीक्षक को प्रतिकूल प्रविष्टि जारी की जाएगी.

इस प्रक्रिया से होगा मूल्यांकंन

चुनौती मूल्यांकन के दूसरे चरण में हर प्रश्नपत्र के लिए कम से कम चार विषय विशेषज्ञों या परीक्षकों का एक पैनल विभाग के माध्यम से बनाया जाएगा. इनमें से किन्हीं दो परीक्षकों द्वारा कॉपी का मूल्यांकन किया जाएगा. पहले मूल परीक्षक द्वारा दिए गए नंबरों को छिपा लिया जाएगा. बाद में पहले और बाद में दिए गए नंबरों का औसत निकाला जाएगा और यही अंक स्टूडेंट को दिए जाएंगे. यदि औसत और मूल अंक में 20 फीसद से ज्यादा का अंतर हुआ तो स्टूडेंट से जमा कराए गए पैसे में से कुछ वापस भी कर दिए जाएंगे. वहीं कॉपी चेक करने वाले प्रोफेसर के लिए कार्रवाई की जाएगी.

"इस सेमेस्टर से स्टूडेंट्स को नई व्यवस्था का लाभ मिलना शुरू हो जाएगा. चैलेंज मूल्यांकन का प्रस्ताव जल्द कॉलेजों को भेज दिया जाएगा.

डॉ. आलोक कुमार राय, वीसी, एलयू

कर सकते हैं चैलेंज

ऑनलाइन कॉपी देखने के बाद स्टूडेंट अगर नंबरों से संतुष्ट नहीं है तो वह फिर से मूल्यांकन के लिए आवेदन कर सकता है. हालांकि यह आवेदन उसे रिजल्ट जारी होने के 45 दिन के अंदर करना होगा. इसके लिए उसे प्रति सब्जेक्ट के हिसाब से फीस जमा करनी होगी. यह फीस कितनी होगी, यह अभी तय नहीं किया गया है. सूत्रों का कहना है कि यह फीस 25 सौ रुपए प्रति सब्जेक्ट हो सकती है.

30 दिन के अंदर चुनौती मूल्यांकन के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं. स्कैन कॉपी देखने के लिए उन्हें 300 रुपए जमा करने होंगे.